RAM CHAND PAUL

Ram Chand Paul (1919 - 2002) was a distinguished scientist, educationist, administrator, science promoter and author of a large number of research papers and books. He played a pivotal role in the growth of Panjab University where he worked as Professor and Head of Chemistry Department (1959 - 74), Dean of University Instruction (1965-67) and as Vice-Chancellor (1974-84). He played a seminal role in the development of the University into a first rate academic institution of the country. Due to his dynamic leadership and vision, the Department of Chemistry grew by leaps and bounds and was recognized by University Grants Commission as a Centre for Advanced Studies in Chemistry. The Department acquired international stature and signed several collaborative programmes with academic institutions in UK, the erstwhile USSR, Hungary and USA. He was conscious of the fact that research facilities for scientists in the university were inadequate and his untiring efforts led to the establishment of the Regional Sophisticated Instrumentation Centre (RSIC) and Central Instrumentation Laboratory (CIL) on the University campus. These facilities provided a quantum jump in the research quality and productivity not only in Panjab University but also in other institutions all over the country.

Born in Shakargarh (now in Pakistan) on 20 October, 1919, he studied at Central Model School, Lahore, Hindu College, Amritsar and Khalsa College, Amritsar. He graduated from the Honours School in Chemistry of the Punjab University, Lahore in 1939 and obtained M.Sc. (Hons. School) in 1940. He obtained his Ph.D. under the guidance of Dr. S. D . Muzaffar in 1947at Lahore and earned his second Ph.D. degree in 1954 from Cambridge University. In recognition of his distinguished research work, the University of Cambridge conferred on him the degree of Doctor of Sciences, Sc.D. (Cantab) in 1968.

Ram Chand Paul laid the foundation of a school called Non-Aqueous Solvent Chemistry leading to pioneering publications in this field. He had a large research group and 80 research scholars submitted their Ph.D. thesis under his guidance. Punjab University at Lahore, at the behest of Professor S. S. Bhatnagar, was the first in the country to start an integrated course in its science departments in the form of Honours School which led to continuation of the undergraduate programme into post graduate degree. The Honours School continued in the university after partition. At one stage a more comprehensive integrated science programme was proposed but could not be adopted by the university due to lack of resources. However, the programme caught the attention of the then Planning Commission of India and was implemented on a grand scale by establishing a number of IISER (Indian Institute of Science Education and Research) in different parts of the country.

In spite of his deep involvement in research, Professor Paul took keen interest in the development of chemical education at all levels. After strengthening and modernizing teaching in his own department, he turned his attention to school and college level curricula in Chemistry. Under his guidance as the Director of a study group in Chemistry (1966-70), teaching material for classes 6 to 10 including laboratory manuals, textbooks and teachers' guides were written. These were published by NCERT which was the sponsoring agency of the project. After the completion of this assignment, he turned his attention towards improvement of teaching chemistry in the colleges. The UGC sanctioned College Science Improvement Programme (COSIP) as a part of the University Leadership Project in Chemistry (ULPIC) to Panjab University. This programme was extremely fruitful and led to distinct improvement in the chemistry curricula at the undergraduate level in Punjab, Haryana and Himachal Pradesh. Reading material and low cost instruments were developed and distributed to all the colleges in these states.

Ram Chand Paul earned academic recognition in the country and abroad in his being elected a fellow of all the three National Academies of Sciences apart from the Royal Institute of Chemistry (London). He was a UGC National Lecturer in Chemistry (1970-1971). He was the General Secretary (1971 – 73) of the Indian Science Congress. He served as Vice-President of the Indian Chemical Society and the National Academy of Sciences, Allahabad in 1976-77.

Ram Chand Paul served as a member of the Governing Body of the Council of Scientific and Industrial Research, the Chemistry and Metallurgy Committee of the Department of Atomic Energy (Government of India) and the Governing Body of the Postgraduate Institute of Medical Education and Research, Chandigarh. He took keen interest in sports and was an excellent swimmer. He was instrumental in the construction of a huge indoor gymnasium hall on the campus. He offered the facilities at the Campus to the Indian Hockey Team in 1975. The pretournament Camp was very successful and the team won the Hockey World Cup that year.

After his retirement as Vice-Chancellor of the Panjab University, he accepted the offer of the university as Professor Emeritus. His latest contribution was the publication of a monograph on Fluorine Chemistry and a number of biographical memoirs of celebrated scientists published by INSA, New Delhi. He was decorated with the life time achievement award by the Indian Chemical Society.

Department of Posts is pleased to issue a Commemorative Postage Stamp on Ram Chand Paul.

Credits:

Text	: Based on information received from the proponent
Stamps/FDC/Brochure/	: Ms. Gulistaan
Cancellation Cachet	: Smt. Nenu Gupta

भारतीय डाक विभाग
Department of Posts
India

राम चंद पॉल
RAM CHAND PAUL

विवरणिका BROCHURE
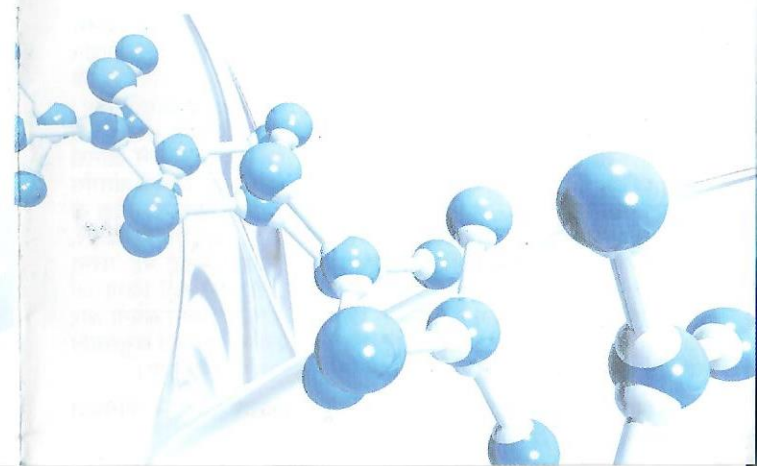
राम चंद पॉल

राम चंद पॉल (1919–2002) एक प्रतिष्ठित वैज्ञानिक, शिक्षाविद, प्रशासक, विज्ञान प्रवर्तक होने के साथ–साथ अनेकानेक शोध पत्रों और पुस्तकों के लेखक थे। पंजाब विश्वविद्यालय में प्रोफेसर और रसायन विज्ञान विभाग के अध्यक्ष (1959–74), डीन ऑफ यूनिवर्सिटी इंस्ट्रक्शन (1965–67) तथा कुलपति (1974–84) के रूप में कार्यरत रहते हुए उन्होंने पंजाब विश्वविद्यालय के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। पंजाब विश्वविद्यालय का विकास करने तथा इसे देश की प्रथम दरजे की शैक्षिक संस्था बनाने में उनका उल्लेखनीय योगदान था। उनके कुशल नेतृत्व और उनकी दूरदृष्टि से रसायन विज्ञान विभाग में तेजी से विकास हुआ तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने इसे रसायन विज्ञान के क्षेत्र में उन्नत अध्ययन केन्द्र के रूप में मान्यता प्रदान की। इस विभाग ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति अर्जित की तथा यूके, तत्कालीन यूएसएसआर, हंगरी तथा यूएसए की शैक्षिक संस्थाओं के साथ अनेक सहयोगात्मक कार्यक्रमों पर हस्ताक्षर किए। वे इस तथ्य को लेकर सजग थे कि विश्वविद्यालय में वैज्ञानिकों के लिए शोध सुविधाएं पर्याप्त नहीं थीं और यह उनके अथक प्रयासों का ही परिणाम था कि विश्वविद्यालय परिसर में क्षेत्रीय उन्नत उपकरण प्रयोगशाला (आरएसआईसी) तथा केन्द्रीय उपकरण प्रयोगशाला (सीआईएल) की स्थापना हो सकी। इन सुविधाओं से न केवल पंजाब विश्वविद्यालय में, बल्कि देश की अन्य संस्थाओं में भी शोध की गुणवत्ता एवं उत्पादकता में व्यापक परिवर्तन आया।

राम चंद पॉल का जन्म 20 अक्तूबर, 1919 को शकरगढ़ (जो अब पाकिस्तान में है) में हुआ और उन्होंने सेंट्रल मॉडल स्कूल, लाहौर, हिन्दू कॉलेज, अमृतसर और खालसा कॉलेज, अमृतसर में शिक्षा प्राप्त की। वर्ष 1939 में उन्होंने पंजाब विश्वविद्यालय, लाहौर से रसायन विज्ञान के ऑनर्स स्कूल से स्नातक की डिग्री प्राप्त की और वर्ष 1940 में स्नातकोत्तर डिग्री (ऑनर्स स्कूल) प्राप्त की। वर्ष 1947 में उन्होंने डॉ. एस. डी. मुजफ्फर के मार्गदर्शन में पीएचडी की उपाधि प्राप्त की और वर्ष 1954 में कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से पीएचडी की दूसरी उपाधि अर्जित की। उनके उल्लेखनीय शोध कार्य को मान्यता देते हुए कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय ने वर्ष 1968 में उन्हें डॉक्टर ऑफ साइंसेज (एससी.डी.) (कैन्टाब) की उपाधि प्रदान की।

राम चंद पॉल ने नॉन–एक्वस सॉल्वेंट केमिस्ट्री की एक नई विचारधारा की नींव रखी, जिसके परिणामस्वरूप इस क्षेत्र में कई पथ प्रदर्शक प्रकाशन हुए। उनके अधीन शोध के छात्रों का एक विशाल समूह था तथा उनके मार्गदर्शन में 80 से अधिक शोधार्थियों ने पीएचडी के शोध पत्र प्रस्तुत किए। प्रोफेसर एस. एस. भटनागर के अनुरोध पर पंजाब विश्वविद्यालय, लाहौर देश का एक ऐसा प्रथम विश्वविद्यालय बना, जिसके विज्ञान विभागों में ऑनर्स स्कूल के रूप में ऐसे एकीकृत पाठ्यक्रमों की शुरुआत की गई, जिनके अंतर्गत स्नातक स्तर से स्नातकोत्तर स्तर तक पाठ्यक्रम संचालित किए गए। देश के विभाजन के बाद भी विश्वविद्यालय में ऑनर्स स्कूल जारी रहा। एक समय पर, एक अधिक व्यापक एकीकृत विज्ञान कार्यक्रम की योजना बनाई गई, परन्तु संसाधनों की कमी के कारण विश्वविद्यालय द्वारा इसे लागू नहीं किया जा सका। तथापि, इस कार्यक्रम ने भारत के योजना आयोग का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया और इसे देश के विभिन्न भागों में, विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान (आईआईएसईआर) के रूप में बड़े पैमाने पर लागू किया गया।

शोध में अत्यधिक लगन होने के बावजूद, प्रोफेसर पॉल की केमिकल शिक्षण के विकास में गहन रुचि थी। अपने विभाग में शिक्षण को सुदृढ़ और आधुनिकीकरण करने के बाद उन्होंने अपना ध्यान, स्कूल और कॉलेज स्तर पर रसायन विज्ञान से संबंधित पाठ्यक्रमों पर केन्द्रित किया। रसायन विज्ञान में एक अध्ययन समूह के निदेशक (1966–70) के रूप में उनके मार्गदर्शन के अंतर्गत, छठी से दसवीं कक्षा के लिए, लैबोरेट्री मैनुअल्स, पाठ्य–पुस्तकें और अध्यापन निर्देशिकाएं जैसी शिक्षण सामग्री तैयार की गई। यह सामग्री परियोजना की प्रायोजक एजेंसी, एनसीईआरटी द्वारा प्रकाशित की गई। इस कार्य के पूरा होने के बाद, उन्होंने कॉलेजों में रसायन विज्ञान के शिक्षण पर अपना ध्यान केन्द्रित किया। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने पंजाब विश्वविद्यालय के यूनिवर्सिटी लीडरशिप प्रोजेक्ट इन कैमिस्ट्री (यूएलपीआईसी) के भाग के रूप में कॉलेज साइंस इम्प्रूवमेंट प्रोग्राम (सीओएसआईपी) को स्वीकृति प्रदान की। यह कार्यक्रम अत्यंत सफल रहा तथा इसके फलस्वरूप पंजाब, हरियाणा और हिमाचल प्रदेश में स्नातक स्तर पर रसायन विज्ञान के पाठ्यक्रम में उल्लेखनीय सुधार हुआ। इन राज्यों के सभी कॉलेजों में पठन सामग्री एवं कम लागत के उपकरणों को विकसित एवं वितरित किया गया।

रॉयल इंस्टीट्यूट ऑफ केमिस्ट्री (लंदन) के अतिरिक्त, तीन राष्ट्रीय विज्ञान अकादमियों के फैलो सदस्य के रूप में प्रोफेसर पॉल ने देश–विदेश में शैक्षिक मान्यता अर्जित की। वर्ष 1970–71 में वे विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के, रसायन विज्ञान के राष्ट्रीय लेक्चरर थे। 1971–73 के दौरान वे भारतीय विज्ञान कांग्रेस के महासचिव थे। 1976–77 में वे इंडियन कैमिकल सोसाइटी तथा राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, इलाहाबाद के अध्यक्ष रहे।

राम चंद पॉल, वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद, परमाणु ऊर्जा विभाग (भारत सरकार) की रसायन विज्ञान और धातुकर्म समिति के शासी निकाय के सदस्य तथा स्नातकोत्तर चिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, चंडीगढ़ के शासी निकाय के एक सदस्य भी रहे। खेलकूद में भी उन्होंने गहन रुचि दिखाई तथा वे एक कुशल तैराक थे। विश्वविद्यालय के परिसर में एक विशाल इंडोर जिम्नेजियम हॉल का निर्माण, उन्हीं के प्रयासों के कारण संभव हो सका। 1975 में भारतीय हॉकी टीम को उन्होंने विश्वविद्यालय परिसर में सुविधाएं प्रदान कीं। टूर्नामेंट से पहले लगाया गया कैंप बेहद सफल रहा तथा टीम ने उस वर्ष हॉकी विश्व कप जीता।

पंजाब विश्वविद्यालय के कुलपति पद से सेवानिवृत्त होने के पश्चात, इन्होंने विश्वविद्यालय का प्रोफेसर इमेरिटस का प्रस्ताव स्वीकार किया। उनका नवीनतम योगदान, 'फ्लोरीन रसायन विज्ञान' पर प्रकाशित विशेष लेख तथा आईएनएसए, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित प्रतिष्ठित वैज्ञानिकों की जीवनियां हैं। उनके महत्वपूर्ण योगदान के सम्मान स्वरूप इंडियन केमिकल सोसाइटी द्वारा उन्हें लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड से नवाजा गया।

डाक विभाग राम चंद पॉल पर एक स्मारक डाक–टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभारः–

मूलपाठ : प्रस्तावक से प्राप्त सामग्री के आधार पर

डाक–टिकट / प्रथम दिवस आवरण / विवरणिका : सुश्री गुलिस्तान

विरूपण मोहर : श्रीमती नीनु गुप्ता

भारतीय डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS
INDIA

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	:	500 पैसा
Denomination	:	500p
मुद्रित डाक-टिकटें	:	402380
Stamps Printed	:	402380
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at
http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

मूल्यः ₹ 5.00